राज्य अध्याय 12

1	**प्रार्थना**

समूह का अगुवा। परमेश्वर की उपस्थिति के विषय में जागरूकता के लिए, उसकी आवाज सुनने के लिए और उसके आत्मा के माध्यम से परमेश्वर द्वारा मार्गदर्शन हेतु ***प्रार्थना करें।***

2	**साझा करना** (20 मिनट) ***(शांत समय)*** **2शमूएल 11,12,13 और 24**

अपनी बारी आने पर संक्षेप में ***साझा करें*** ***(या*** अपने नोट्स से ***पढ़ें)*** कि आपने दिये गये बाइबल अनुच्छेद (2शमूएल 11,12,13 और 24) से शान्त समय में क्या सीखा है।

अगर कोई व्यक्ति अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें और लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3	**स्मरण करना** (5 मिनट) ***(रोमियों में प्रमुख पद)*** **रोमियों में प्रमुख पद का पुनरावलोकन करें**

दो-दो करके ***समीक्षा करें।***

(1) रोमियों 1:16। क्योंकि मैं सुसमाचार से नहीं लजाता, इसलिये कि वह हर एक विश्वास करनेवाले के लिये, पहले तो यहूदी फिर यूनानी के लिये, उद्धार के निमित्त परमेश्वर की सामर्थ्य है।

(2) रोमियों 1:17। क्योंकि उसमें परमेश्वर की धार्मिकता विश्वास स और विश्वास से और विश्वास के लिये प्रगट होती है; जैसा लिखा है, "विश्वास से धर्मी जन जीवित रहेगा।"

(3) रोमियों 2:5। पर तू अपनी कठोरता और हठीले मन के कारण उसके क्रोध के दिन के लिये, जिसमें परमेश्वर का सच्चा न्याय प्रगट होगा, अपने लिये क्रोध कमा रहा है।

(4) रोमियों 2:15। वे व्यवस्था की बातें अपने अपने हृदयों में लिखी हुई दिखाते हैं और उनके विवेक भी गवाह देते हैं, और उनके विचार परस्पर दोष लगाते या निर्दोष ठहराते हैं।

(5) रोमियों 3:28। इसलिये हम इस परिणाम पर पहुँचते हैं कि मनुष्य व्यवस्था के कामों से अलग ही, विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराता है।

4	**बाइबल अध्ययन** (85 मिनट) ***(रोमियों के नाम पत्री)*** **रोमियों 3:21-31**

परिचय। रोमियों 3:1-20 का अध्ययन करने के लिए बाइबल अध्ययन के पाँच चरणों का उपयोग करें।

रोमियों 3:19-20 में पौलुस अपनी शिक्षा का निष्कर्ष निकालता है कि कोई भी अन्यजाती या यहूदी परमेश्वर की दृष्टि में धर्मी नहीं है और परमेश्वर के सामने सभी दोषी हैं। वह यह भी निष्कर्ष निकालता है कि व्यवस्था बनाए रखने से धार्मिकता प्राप्त नहीं होती। रोमियों 3:21-31 में पौलुस सिखाता है कि धार्मिकता कैसे प्राप्त की जा सकती हैं।

कदम 1. पढ़ें। **परमेश्वर का वचन**

पढ़ें। आइये एक साथ मिलकर रोमियों 3:21-31 तक पढ़ें।

आइये हम में से हर एक जन एक-एक वचन करके अनुच्छेद खत्म हो जाने तक पढ़ें।

कदम 2. खोजें। **अवलोकन**

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में निहित कौन सी सच्चाई आपके लिए महत्वपूर्ण है?

या इस अनुच्छेद के किस सत्य या प्रकाशन ने आपके मन या हृदय को छुआ?

लेखा। प्राप्त एक या दो प्रकाशनों को लिख लें। उस पर विचार विमर्श करें और अपने विचारों को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।

साझा करें। (जब समूह के सदस्य आपस में दो मिनट विचार या लिख लें, तो उसे लोगों के साथ जरूर साझा करें) आईये हम बारी बारी एक दूसरे को बताएं कि हमने क्या सीखा है।

(याद रखें: हर एक छोटे समूह में, समूह के सभी सदस्य अलग बातों को साझा करेगें)

"धर्मी ठहरना" पहले तो बाइबल के परमेश्वर के साथ सही संबंध में खड़े होना है (एक विश्वासी का स्तर या स्थिति) और दूसरा वह करना जो बाइबल के परमेश्वर की दृष्टि में उचित है (बढ़ने की प्रक्रिया या विश्वासि की जीवनशैली)।

"धर्मी ठहराया जाने" का अर्थ है कि बाइबल के परमेश्वर ने किसी को अपनी दृष्टि में पूर्ण रूप से सिद्ध और धर्मी *घोषित किया* और इसके परिणामस्वरूप उसके साथ हमेशा के लिए इस प्रकार *व्यवहार* करना है कि वह पूर्ण रूप से सिद्ध और धर्मी है (क्षमा किया गया, मेल मिलाप कराया गया)। धर्मी ठहरान समर्थी परमेश्वर का न्यायिक कार्य है।

पौलुस ने यह सिद्ध किया कि दुष्ट अन्यजातियों और यहाँ तक कि धार्मिक यहूदियों के लिए भी परमेश्वर की व्यवस्था पालन के उनके व्यक्तिगत कार्य के द्वारा धर्मी ठहरना असंभव है। हालाँकि सुसमाचार घोषणा करता है कि बाइबल परमेश्वर के अनुग्रह और यीशु मसीह में विश्वास करने के द्वारा धर्मी (उद्धार) ठहरने की परमेश्वर की विधि को प्रगट करती है।

3:21-24क

खोज 1. **पौलुस धर्मी ठहरने की प्रकृति की व्याख्या करता है।**

परमेश्वर की आवश्यक धार्मिकता व्यवस्था को पूरा करने से नहीं आती। पहले से ही पुराने नियम में नबियों ने परमेश्वर की धार्मिकता के बारे में गवाही दी जो मसीहा, यीशु मसीह के माध्यम से (यशायाह 53:5-6) स्थापित की जाएगी। और अब परमेश्वर की धार्मिकता नए नियम में सामने आई है।

परमेश्वर की यह धार्मिकता यीशु मसीह की मृत्यु और पुनरूत्थान द्वारा प्राप्त की गई है और यह प्रत्येक व्यक्ति के लिए उपलब्ध है (खाते में जमा की गई, आरोपण, जोड़ दी गई) जो यीशु मसीह पर विश्वास करता है, भले ही वह एक यहूदी हो या एक अन्यजाति।
यहूदियों और अन्यजातियों के बीच कोई अंतर नहीं है, क्योंकि सभी लोग स्वभाव ही से पथ भ्रष्ट और खोए हुए हैं।

(वचन 22 और 23 एक ऐसा कोष्टक है जो दोनों के लिए, क्या पूर्ववर्ती है और क्या अनुसरण करना है, बहुत महत्वपूर्ण संबंध में खड़ा होता है। वचन 24 वचन 22 के विषय को फिर से शुरू करता है और इसका विस्तार करता है)।

यीशु मसीह में विश्वास के माध्यम से यह धार्मिकता लोगो को परमेश्वर के अनुग्रह से प्रदान की जाती है। यह पूर्ण रूप से निःशुल्क है।

3:24-25

खोज 2. **पौलुस धर्मी ठहरने के आधार को समझाता है।**

"छुटकारा" (यूनानीः अपोल्यूट्रोसिस) का अर्थ है गुलाम या बंदी को फिर से खरीदना, फिरौती देकर उसे स्वतंत्र कराना। फिरौती (यूनानीः लूट्रॉन) एक गुलाम को स्वतत्रं करने की कीमत निर्धारित करना है। खोए हुए लोगों को छुडाने की कीमत यीशु मसीह के जीवन से कम नहीं है जिसे उन्होंने बहुतो के "स्थान पर" या "लाभ के लिए" दिया (मरकुस 10:45; यूहन्ना 10:11; 2कुरिन्थियों 5:21)। उन्होंने स्वयं को प्रायश्चित के स्वैच्छिक बलिदान के रूप में दिया (यूहन्ना 3:18; 1पतरस1:18-19)। फिरौती चुकाई गयी, शैतान को नहीं लेकिन परमेश्वर पिता को। अपनी मृत्यु और मुर्दो में से अपने पुनरूत्थान के कारण यीशु मसीह स्वयं मसीहियों की धार्मिकता और पवित्रता और छुटकारा बन गए (1कुरिन्थियों 1:30; इफिसियों 2:4-7)।

परमेश्वर की परिपूर्ण पवित्रता और धार्मिकता ने मांग की कि संसार के इतिहास के सभी पापों (अपवित्रता और अधार्मिकता) को दंडित किया जाए और संसार के इतिहास के सभी लोग सिद्ध और धार्मिक और पवित्र जीवन जीएं। क्योंकि यीशु मसीह को छोड़ और कोई भी संसार में पूर्ण रूप से पवित्र और धर्मी (पाप रहित) जीवन नहीं जी पाया, केवल वह ही प्रायश्चित का पात्र होने के योग्य थे जो लोगों के लिए फिरौती दे सकते थे। प्रायश्चित का बलिदान (यूनानीः हिलेस्टिरीयन) (वह जो क्षतिपूर्ति या संतुष्ट करता है, निष्कासन का साधन) वह बलिदान है जो पाप के विरूद्ध परमेश्वर के पवित्र और

धर्मी क्रोध (आक्रोश) को शांत करता है और स्वयं पाप और उसके परिणाम को दूर करता है। अपने "लहू" के द्वारा जो, उनकी मृत्यु और मुर्दों में से उनका पुनरूत्थान है, यीशु समीह स्वयं ही वह बन गए जिसने परमेश्वर के क्रोध को एक तरफ कर दिया और हमारे पापों को दूर कर दिया (1पतरस 2:24)। इस प्रकार प्रायश्चित बलिदान एक प्रतिस्थापन्न बलिदान था, पापियों के स्थान पर बलिदान।

3:25-26

खोज 3. **पौलुस धर्मी ठहराने के उद्देश्य को समझाता है।**

पुराने नियम की अवधि (तैयारी की अवधि) के दौरान परमेश्वर अक्सर अपने लोगों के पापों को सहन करते थे। ऐसा प्रतीत हुआ जैसे परमेश्वर अन्यायपूर्ण थे, क्योंकि उन्होने पाप करने वाले लोगों को दंडित नहीं किया।

लेकिन नए नियम की अवधि (पूरिपूर्णता की अवधि) के दौरान यीशु मसीह के प्रायश्चित बलिदान के माध्यम से परमेश्वर ने दिखाया कि वे धर्मी और दयालु दोनों थे। परमेश्वर पूर्ण रूप से धर्मी हैं क्योंकि उन्होंने सभी विश्वासियों के *इतिहास* में पापों को यीशु मसीह की मृत्यु के द्वारा *एक बार में हमेशा* के लिए दंडित किया। परमेश्वर विश्वासियों का न्याय करने और स्वयं से उनका मेल मिलाप करने में पूर्ण रूप से दयावंत है (1पतरस 3:18)। परमेश्वर ने दिखाया की वह अपने चरित्र में सिद्ध है। एक ओर, परमेश्वर पूर्ण रूप से पवित्र और धर्मी रहते हैं क्योंकि उन्होंने पाप को दंडित किया। दूसरी ओर, परमेश्वर पूर्ण रूप से दयालु और प्रेमी है, क्योंकि वे पापियों को बचाते है। सम्पूर्ण मानव इतिहास में केवल यीशु मसीह का क्रूस ही परमेश्वर के सिद्ध प्रेम के साथ परमेश्वर की सिद्ध धार्मिकता का सामंजस्य स्थापित करने में संक्षम था।

3:27-31

खोज 4. **पौलुस धर्मी ठहरने के *परिणाम* को समझाता है।**

क्योंकि यीशु मसीह ने स्वयं में विश्वासियों के लिए सिद्ध धार्मिकता अर्जित की, व्यवस्था के कामों का घमण्ड (व्यवस्था बनाए रखना) दूर हुआ। जो कुछ भी यीशु मसीह ने पूरा किया, वह उसे दूर करता है जो लोग पूरा करने की कोशिश करते हैं। यीशु मसीह की उपलब्धि मनुष्यों की उपलब्धियों के सभी घमण्ड को दूर करती है। व्यवस्था के कामों के द्वारा *धर्मी ठरहने के सिंद्धात* (व्यवस्था) को (इस्त्राएल की नैतिक, औपचारिक और नागरिक व्यवस्था को बनाए रखना) यीशु मसीह के द्वारा पूर्ण किए गए उद्धार के काम पर विश्वास करने के द्वारा *धर्मी ठहरने के वास्तविक सिद्धांत* (व्यवस्था) ने दूर कर दिया।

इस प्रकार एक व्यक्ति नैतिक, औपचारिक और नागरिक व्यवस्था को बनाए रखने (613 मानाव निर्मित कानून जो यहूदियों ने परमेश्वर की व्यवस्था में जोड़ दिए) से अलग विश्वास के द्वारा धर्मी ठहरता है।

यह धर्मी ठहराया जाना परमेश्वर को प्रस्तुत करता है और वह वास्तव में ऐसे ही हैंः कवेल एक विशेष समूह (यहूदियों) के परमेश्वर के रूप में नहीं, लेकिन *सभी लोगों* (यहूदियों और अन्यजातियों) *के परमेश्वर* के रूप में।

परमेश्वर यहूदियों और अन्यजातियों को एक ही समान धर्मी ठहराते हैंः अर्थात यीशु मसीह पर विश्वास करने के माध्यम से।

परमेश्वर का नए नियम का प्रकाशन परमेश्वर के पुराने नियम के प्रकाशन को खारिज नहीं करता, लेकिन इसकी पुष्टि करता है!

कदम 3. प्रश्न। **व्याख्या**

ध्यान दें। आप इस समूह से इस अनुच्छेद के आधर पर कौन सा प्रश्न पूछ सकते हैं?

आईये रोमियो 3:1-31 में पायी जाने वाली सच्चाईयों को समझने का प्रयास करें और उन बातों के बारे में प्रश्न पूछें जो हम अभी तक नहीं समझते।

लिखें। अपने प्रश्नों को जितना सम्भव हो स्पष्ट रूप दें। फिर उसे अपनी नोटबुक में लिखें।

साझा करें। (समूह के सभी लोग जब दो मिनट सोच विचार करके लिख चुके हों तो, होनें दे कि पहले हर सदस्य अपना प्रश्न साझा करें।)

चर्चा करें। (उसके पश्चात अपने समूह में एक साथ मिलकर कुछ प्रश्नों को चुनकर उन पर चर्चा करें।)

(नीचे विद्यार्थियों द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्नों पर चर्चा करने पर प्राप्त विचारों के नोट्स के उदाहरण दिये गये हैं।)

3:31

प्रश्न 1. **रोमियों 3 अध्याय में "व्यवस्था" शब्द का क्या अर्थ है?**

ध्यान दें।

"व्यवस्था" शब्द (यूनानीः नोमोस) के रोमियों के पत्र और बाइबल में कई अलग-अलग अर्थ हैं।

(1) "व्यवस्था" सभी लोगों के लिए परमेश्वर की पवित्र और धार्मिक आवश्यकता है (रोमियों 3:19)।

यह व्यवस्था विश्वासियों के लिए केवल यीशु मसीह के द्वारा पूरी की गई किसी अन्य मनुष्य के द्वारा नहीं।

परमेश्वर पवित्र और धर्मी परमेश्वर है। इसलिए एक ओर परमेश्वर की आवश्यकता है कि सभी पापों को दंडित किया जाए लेकिन दूसरी ओर परमेश्वर की आवश्यकता है कि सभी लोग पूर्ण रूप से धर्मी और पवित्र हों और पूर्ण रूप से धर्मी और पवित्र जीवन जीएं! परमेश्वर की इस आवश्यकता को परमेश्वर की 'व्यवस्था' कहा गया है (रोमियों 3:19ख)- परमेश्वर की पवित्र और धार्मिक आवश्यकता। देखें रोमियों 3:19-20।

(2) ''व्यवस्था'' बाइबल में निहित आज्ञाएँ, निषेध और नियम हैं (रोमियों 3:10-18)।
औपचारिकता को पूरा किया गया, रद्द और निरस्त किया गया है।
नागरिक व्यवस्था को परमेश्वर के राज्य द्वारा बदल दिया गया।
लेकिन नैतिक कानून वैध रहता है।

पुराने नियम में तीन तरह की ''व्यवस्था'' हैं, जिन्हें एक दूसरे से पूरी तरह से अलग नहीं किया जा सकता, लेकिन निम्नानुसार मोटे तौर पर विख्यात किया जा सकता हैः

पहला। नैतिक व्यवस्था। सभी लोगों के धर्मी ठहरने के लिए नैतिक व्यवस्था परमेश्वर की पवित्र और धार्मिक आवश्यकता है। यीशु मसीह को छोड़ और किसी ने इस आवश्यकता को पूरा नहीं किया। एक व्यक्ति के मसीही बनने के बाद, नैतिक व्यवस्था परमेश्वर की पवित्र और धार्मिक आवश्यकता है कि कैसे एक मसीही (मसीह में धर्मी ठहराए गए विश्वासी) को परमेश्वर का जन होने के नाते आपने जीवन को जीना चाहिए। नैतिक व्यवस्था दस आज्ञाओं और बाइबल में निषिद्ध अन्य आज्ञाओं में प्रकट है। नैतिक व्यवस्था को *कभी रद्द या निरस्त नहीं किया गया।* यह नए नियम की अवधि के दौरान उद्धार पाए हुए (धर्मी) मसीही जीवन जीने के नियम के रूप में वैध है। रोमियों 3:10-18 में भजन और यशायाह से लिए गए उद्धरण इस व्यवस्था के उदाहरण हैं।

जो कुछ भी यह ''व्यवस्था'' (अर्थातः पुराने नियम के वचन) (रोमियों 3:19) कहती है, यह संसार के सभी लोगों के लिए है, ससांर के सभी लोग ''इस व्यवस्था में शामिल हैं''[1] (अर्थातः परमेश्वर की पवित्र और धार्मिक आवश्यकता) (रोमियों 3:19)। इसलिए ''व्यवस्था'' केवल पुराने नियम के एक हिस्से से ली गई केवल दस आज्ञाएँ नहीं है बल्कि परमेश्वर की सभी आज्ञाएँ, आवश्यकताएँ और सम्पूर्ण पुराने नियम में पाए जाने वाले निर्णय है। यह व्यवस्था मृत नहीं है, लेकिन ''बोलती'' है। परमेश्वर के आत्मा का एक महत्वपूर्ण कार्य लोगों को पाप, धार्मिकता और न्याय के प्रति कायल करना है (यूहन्ना 16:8)। आत्मा बाइबल के वचनों को ''जीवित'' बनाती है ताकि वह लोगों के हृदयों, मन और विवेक से बातें कर सकें (इब्रानियों 4:12; 2तीमुथियुस 3:16-17)।
रोमियों 3:19ख कहता है कि संसार के सभी लोग परमेश्वर की व्यवस्था में शामिल (अधीन नहीं) हैं (अर्थातः परमेश्वर की पवित्र और धार्मिक आवश्यकता जैसा कि विशेष रूप से बाइबल में निहित नैतिक और निषिद्ध आज्ञाओं में प्रकट किया गया है)।

- रोमियों 3:19ख कहता है कि ''व्यवस्था'' (अर्थातः परमेश्वर की पवित्र और धार्मिक आवश्यकता जो नैतिक व्यवस्था में प्रकट है) *एक न्यायी के रूप में कार्य करती है।* यह बाइबल के परमेश्वर और बाइबल में उनके प्रकाशन के विरूद्ध हर एक तर्क को शांत करती है और लोगों को बाइबल के परमेश्वर को लेखा देने के लिए जिम्मेदार ठहराती है।
- रोमियों 3:20ख कहता है कि ''व्यवस्था'' एक *दर्पण* के समान काम करती है। यह लोगों को

[1] रोमियों 3:19 ''व्यवस्था के अधीन नहीं'' लेकिन, ''व्यवस्था में शामिल''''

दिखाती है कि वे वास्तव में कैसे है, परमेश्वर उन्हें कैसे देखते है और वास्तव में वे कितने पापमय है। यह उन्हें जगरूक और दर्दनाक रूप से अवगत करती है कि वे पूर्ण रूप से पथ भ्रष्ट हैं।

- और रोमियों 3:21क कहता है कि "व्यवस्था" एक *उद्धारकर्ता* के समान काम नहीं कर सकती। यह धर्मी ठहरने का मार्ग प्रगट नहीं कर सकती या लोगों को परमेश्वर की दृष्टि में उद्धार नहीं दिला सकती। यह उद्धार के मार्ग को प्रगट नहीं कर सकती (धर्मी ठहरना और शुद्धिकरण किया जाना)।

दूसरा। औपचारिक व्यवस्था। औपचारिक या अनुष्ठान संबंधि व्यवस्था परमेश्वर की आवश्यकता है कि लोगों को प्रार्थना या आराधना में परमेश्वर के पास किस प्रकार जाना है।

- पुराने नियम की अवधि में इन्हें विभिन्न औपचारिक व्यवस्था के रूप में व्यक्त किया गया था, जिनमें निम्न शामिल थेः
  - मंदिर के विषय में व्यवस्था
  - याजकों के विषय में व्यवस्था
  - सब्त और धार्मिक त्योहारों के विषय में व्यवस्था
  - भेंट और बलिदान के विषय में व्यवस्था

<u>यीशु मसीह के प्रथम आगमन के साथ इन औपचारिक "व्यवस्थाओं" में आवश्यक परिवर्तन हुआ</u> (इब्रानियों 7:12)।

- नए नियम में यीशु मसीह ने
  - औपचारिक व्यवस्था को *पूरा किया* (मत्ती 5:17)
  - उसे *रद्द* किया (कुलुस्सियों 2:14)
  - और इसे *निरस्त किया* (समाप्त) (इफिसियों 2:15)।

<u>औपचारिक व्यवस्था अब नए नियम में वैध नहीं है और इन्हें नए नियम की कलीसिया में फिर से पेश नहीं किया जा सकता</u> (देखें गलातियों 4:8-10; 5:1-7)! पुराने नियम के धार्मिकत त्योहारों को मनाना निरस्त कर दिया गया है! नए नियम की अवधि में परमेश्वर ऐसे लोगों की तलाश करते हैं जो उनकी आराधना अनुष्ठानों, औपचारिक व्यवस्था या धार्मिक त्योहारों से नहीं बल्कि आत्मा और सच्चाई से करते हैं (यूहन्ना 4:23-24)।

तीसरा। नागरिक व्यवस्था। नागरिक व्यवस्था परमेश्वर के लोगों के समाज (मंडली) के लिए परमेश्वर की धार्मिक आवश्यकता है।

- पुराने नियम की अवधि के समय परमेश्वर की आवश्यकता के अनुसार इस्त्राएल को राष्ट्रीय और राजनैतिक स्तर पर किस प्रकार काम करना चाहिए उसमे संपत्ति, कर, युद्ध, बीमारियों से निपटने और यौन उल्लंघनों के बारे में नियम शामिल हैं।

- नए नियम में परमेश्वर के लोगों, इस्त्राएल में विश्वासियों को, एक उच्च स्तर पर *जारी* रखा गया है और इसे *बढ़ाने* के लिए अन्य सभी देशों के विश्वासियों को भी शामिल किया गया है। इसलिए पुराने नियम की नागरिक व्यवस्था को नए नियम में परमेश्वर के राज्य के विषय में यीशु मसीह की शिक्षाओं द्वारा *प्रतिस्थापित या सिद्ध* कर दिया गया।

(3) "व्यवस्था" पुराना नियम या इसका भाग है (रोमियों 3:19क, 21ख)।

यह व्यवस्था बाइबल के पुराने नियम का भाग है।

नैतिक व्यवस्था (दोषी ठहराने और उद्धार के लिए परमेश्वर की पवित्र और धार्मिक आवश्यकता), औपचारिक व्यवस्था (पुराने नियम की अवधि में परमेश्वर के पास आना और उनकी आराधना करने के लिए परमेश्वर की आवश्यकता) और नागरिक व्यवस्था (पुराने नियम की अवधि में इस्त्राएल के समाज को नियंत्रित करने की परमेश्वर की आवश्यकता) को आज्ञाओं निषेधाज्ञा और नियमों के रूप में व्यक्त किया गया है जो कि पुराने नियम के वचनों में लिखे हैं। यही कारण है कि पुराने नियम शास्त्र को अक्सर "व्यवस्था (इब्रानिः थोरा) और भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकें" कहा जाता है (मत्ती 5:17)।

लेकिन पुराने नियम के वचनों में नैतिक व्यवस्था, औपचारिक व्यवस्था और नागरिक व्यवस्था से कहीं अधिक और भी कुछ शामिल है। इसमें उद्धार का इतिहास, धार्मिक कविताएँ और भविष्यवाणियाँ शामिल हैं। रोमियों 3:21 कहता है कि, "व्यवस्था" (अर्थातः पुराने नियम के वचन) "लोगों को धर्मी ठहराने या व्यवस्था से अलग लोगों को उद्धार प्राप्त करने के मार्ग को प्रगट करती है" (इस संबंध में कि बहुत से लोग नैतिक, औपचारिक और नागरिक व्यवस्था को बनाए रखने का प्रयास करते हैं)।

पुराने नियम और नए नियम के वचनों से पता चलता है किः

- "धार्मिकता" परमेश्वर का गुण है मनुष्य का नहीं
- बाइबल के पवित्र और धर्मी परमेश्वर के द्वारा सभी लोगों से इस धार्मिकता की मांग की जाती है
- यह धार्मिकता मनुष्य के द्वारा केवल उसके अनुग्रह के वरदान के रूप में विश्वास के माध्याम से प्राप्त की जा सकती है (उत्पत्ति 15:6; गलातियों 3:6-9)। परमेश्वर की धार्मिकता को कभी भी मनुष्य के द्वारा "व्यवस्था बनाए रखने की कोशिश" से प्राप्त नहीं किया जा सकता (मनुष्य के द्वारा नैतिक, औपचारिक और नागरिक व्यवस्था के कामों को करने के द्वारा)!

(4) "व्यवस्था" एक सिद्धांत या प्रणाली या पद्धति या चीजों का क्रम हो सकती है (रोमियों 3:27)।

3:21-24क

प्रश्न 2. **उद्धार या धर्मी ठहरने का आधार, माध्यम और प्रकृति क्या है?**

ध्यान दें।

धर्मी ठरहने की *प्रकृति* यह है कि यह परमेश्वर की धार्मिकता है मनुष्य की धार्मिकता नहीं।
धर्मी ठहरने का *आधार* यह है कि परमेश्वर धार्मिकता अनुग्रह से सेंत मेंत देता है।
धर्मी ठहरने का *माध्यम* यह है कि मनुष्य परमेश्वर की धार्मिकता (मसीह) को विश्वास से प्राप्त करता है।
"मसीह यीशु हमारी धार्मिकता है" (1कुरिन्थियों 1:30)।

(1) धर्मी ठहरने की *प्रकृति* परमेश्वर की धार्मिकता है,
मनुष्य की धार्मिकता नहीं (रोमियों 3:21,23)।

कुछ लोग परमेश्वर की धार्मिकता को *परमेश्वर से प्राप्त* होने वाली धार्मिकता मानते हैं *(परमेश्वर के द्वारा दी गई है)।* दूसरे लोग परमेश्वर की धार्मिकता को परमेश्वर के द्वारा *अनुमोदित* धार्मिकता मानते है। और अन्य लोग परमेश्वर की धार्मिकता को उस धार्मिकता (विश्वासी की) के रूप में मानते है जिस *परमेश्वर के साथ प्राप्त* किया जाता है और इसलिए विश्वास करने वाले को धर्मी ठहरा सकती है। हालाँकि संदर्भ यहाँ बहुत स्पष्ट रूप से बताता है कि परमेश्वर की धार्मिकता *परमेश्वर के स्वभाव और अधिकार* से कुछ भी कम नहीं है! केवल परमेश्वर धर्मी है और केवल परमेश्वर के पास ही धार्मिकता का अधिकार है! यह कभी भी मनुष्य की धार्मिकता नहीं है।

परमेश्वर की धार्मिकता सभी लोगों की धार्मिकता के विपरीत है। यह धार्मिकता ''व्यवस्था से अलग'' है, यह मनुष्य के द्वारा धार्मिकता प्राप्त करने के लिए नैतिक, औपचारिक और नागरिक व्यवस्था को बनाए रखने के सर्वोत्तम प्रयासों से अलग है (रोमियों 3:21क)। यहाँ तक कि व्यवस्था को बनाए रखने की कोशिश के द्वारा उत्पन्न सबसे उत्तम मानवीय धार्मिकता (यशायाह 64:6) भी मानव पापों द्वारा बनाई गई स्थिति के खिलाफ परमेश्वर के धर्मी क्रोध को संतुष्ट करने के लिए पर्याप्त नहीं है, ना ही मानव आचरण के लिए परमेश्वर के पूर्ण मानको को पूरा करने में पर्याप्त है।

''सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं'' (रोमियों 3:23)। एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं है जिसके पास ''परमेश्वर की महिमा'' हो, जो कि परमेश्वर की पवित्रता या धार्मिकता या विश्वासयोग्यता या प्रेम है। सभी मनुष्यों ने

- पाप में गिरने के कारण अपनी पूर्णता की स्थिति को खो दिया
- परमेश्वर के महिमामय चरित्रगुणों को खो दिया
- परिणामस्वरूप परमेश्वर की स्वीकृति को खो दिया।

इसलिए, <u>परमेश्वर की धार्मिकता मनुष्य की धार्मिकता और मनुष्य की अधार्मिकता दोनों के पूर्ण विपरीत है।</u> परमेश्वर की धार्मिकता कभी भी मनुष्य के द्वारा उत्पादित या स्थापित नहीं की जा सकती। धार्मिकता केवल परमेश्वर की विशेषता है और इस पर केवल परमेश्वर का अधिकार है। परमेश्वर धार्मिकता के <u>एकमात्र लेखक</u> है, धार्मिकता के <u>एकमात्र अधिकारी</u> है और धार्मिकता के <u>एकमात्र दाता</u>

हैं! इसलिए, यह एकमात्र धार्मिकता है जिसे परमेश्वर ने स्वीकृति दी है और एकमात्र धार्मिकता जो परमेश्चर के साथ मेल खाती है (जो उन्हें कायल करती है)।

(2) धर्मी ठहरने का *माध्यम* वह धार्मिकता है जो केवल विश्वास से प्राप्त की जाती है (रोमियों 3:22)।

परमेश्वर की धार्मिकता मनुष्य की धार्मिकता नहीं है, इसलिए इसे प्राप्त करने के लिए मनुष्य को इसे परमेश्वर से *प्राप्त* करना होगा, परमेश्वर के अनुग्रह से (परमेश्वर दाता है) और विश्वास के द्वारा इसे प्राप्त करना होगा (प्राप्त करने वाले का विश्वास)। मनुष्य इसे परमेश्वर से कमा नहीं कर सकता, अर्जित नहीं कर सकता और खरीद नहीं सकता! वह केवल इसे परमेश्वर से स्वीकार कर सकता है! वह इसे यीशु मसीह पर विश्वास करने के द्वारा प्राप्त करता है।

विश्वासी परमेश्वर की धार्मिकता को "विश्वास के कारण नहीं" (यूनानीः डिआ पिस्टिन), बल्कि "विश्वास के माध्यम" (यूनानीः डिआ पिस्तिऑस) से प्राप्त करता है। विश्वास किसी प्रकार का भला काम *नहीं* है जिसके *आधार* पर परमेश्वर किसी विश्वासी को धर्मी ठहराए। विश्वास एक *साधन या माध्यम* से अधिक (खाली हाथ) कुछ भी नहीं जिसके द्वारा यीशु मसीह में विश्वासी परमेश्वर की धार्मिकता को प्राप्त करता है। विश्वास जो धर्मी ठहराता है वह किसी भी प्रकार का सामान्य धार्मिक विश्वास नहीं है[2], लेकिन *विशेष विश्वास है यीशु मसीह में* और उनकी मृत्यु और पुनरूत्थान में।

परमेश्वर की धार्मिकता उन सभी को दी जाती है जो बिना किसी जाति, संस्कृति या किसी भी भेद भाव या विश्वास की डिग्री के बिना यीशु मसीह पर विश्वास करते हैं। यीशु मसीह के प्रथम आगमन से ही यहूदियों और अन्यजातियों में कोई अंतर नहीं हैः

- उद्धार के मार्ग के रूप में। उद्धार का मार्ग सभी के लिए एक समान है (रोमियों 10:12)।
- आत्मिक और नैतिक स्थिति के रूप मेंः "सभी ने पाप किया है" (रोमियों 3:23)।
- उद्धार प्राप्त करने के साधन के रूप मेंः "व्यवस्था से अलग विश्वास के द्वारा" (रोमियों 3:28)।

(3) धर्मी ठहरने का *आधार* वह धार्मिकता है जो अनुग्रह के द्वारा सेंत मेंत दी जाती है (रोमियों 3:24)।

"वे उस छुटकारे के द्वारा जो यीशु मसीह द्वारा आता है उनके अनुग्रह से सेंत मेंत धर्मी ठहराए जाते हैं" (रोमियों 3:24)। यह धर्मी ठहरने के विषय में पौलुस की शिक्षाओं का सबसे महत्वपूर्ण भाग है। मनुष्यों में ऐसा कुछ भी नहीं न ही मनुष्यों द्वारा ऐसा कुछ किया गया है जो परमेश्वर को कार्य करने के लिए या मनुष्यों को धर्मी ठहराने के लिए विवश करे। वास्तव में तो जो कुछ भी मनुष्य करते हैं वह धर्मी परमेश्वर को विवश करता है कि उनका न्याय करे और उन पर दोष लगाए।

---

[2]यह झूठी शिक्षा है कि सब अपने स्वयं के विश्वास के आधार पर उद्धार पाते है (उदाहरण के लिए , हिन्दू धर्म)।

सुसमाचार का अद्भुत संदेश यह है कि परमेश्वर द्वारा पापियों का न्याय पूर्ण रूप से इस पर आधारित है कि परमेश्वर स्वयं कौन है और वह स्वयं अपने सेंत मेंत और सामर्थी अनुग्रह को कार्य में लाने के लिए क्या करते हैं।

हालाँकि, परमेश्वर के सेंत मेंत और सामर्थी अनुग्रह पर जोर उस माध्यम को अनदेखा नहीं करता जिस माध्यम के द्वारा यह अनुग्रह काम में लाया जाता है। परमेश्वर के अनुग्रह का माध्यम यीशु मसीह और उनके द्वारा अपनी मृत्यु और पुनरूत्थान के द्वारा पूरा किया गया उद्धार का काम है। धर्मी ठहरने या उद्धार का आधार केवल परमेश्वर का आत्म–बलिदान प्रेम और परमेश्वर का कीमती अनुग्रह है जो क्रूस पर यीशु मसीह की मृत्यु द्वारा व्यक्त किया गया। लोगों को सेंत मेंत बांटा गया परमेश्वर का अनुग्रह सस्ता अनुग्रह नहीं है। परमेश्वर का अनुग्रह *कीमती अनुग्रह है,* जिसे लोगों तक पहुँचाने में *बहुत अधिक कीमत* चुकाई गई है अर्थात परमेश्वर के अपने पुत्र यीशु मसीह का जीवन। इस प्रकार परमेश्वर के अनुग्रह से धर्मी ठहरने का अर्थ है कि मनुष्य के लिए धर्मी ठहरना सेंत मेंत है– मनुष्य को इसकी कोई कीमत नहीं चुकानी पड़ती और इसे कमाया या अर्जित नहीं किया जा सकता। इसके विपरीत, मसीह के उद्धार कार्य द्वारा धर्मी ठहराना अर्थात परमेश्वर के लिए धर्मी ठहराना बहुत महंगा था– इसके लिए परमेश्वर को सबसे अधिक कीमत चुकानी पड़ीः अपने पुत्र का जीवन!

क्रूस पर यीशु मसीह की मृत्यु विशेष रूप से परमेश्वर के न्यायपूर्ण कार्य के अनुग्रहपूर्ण चरित्र को बढ़ाती है। परमेश्वर की दया और अनुग्रह (उनका प्रेम) परमेश्वर की धार्मिकता या पवित्र को खत्म या रद्द नहीं करता, लेकिन परमेश्वर की धार्मिकता और पवित्रता की मांगो को पूरा करता है। क्योंकि उन्होंने स्वयं कीमती चुकाई है, इसलिए वे अपवित्र और अधर्मी लोगों के प्रति बिना अपनी पवित्रता और धार्मिकता को अलग किए अपनी दया और अनुग्रह (उनका प्रेम) का अभ्यास करने में सक्षम हैं!

3:24ख–25क

***प्रश्न 3.* धर्मी ठहरने (उद्धार) का क्या प्रभाव है?**

ध्यान दें।

मसीह के द्वारा लायी गई धर्मिकता के प्रभाव हैः

- वह अधर्मी लोगों को छुटाकार देता है
- परमेश्वर के धर्मी (न्यायी) क्रोध को शांत करता है (इस प्रकार शांति लाता है)[3]
- और खोए हुए लोगों का परमेश्वर से मेल मिलाप करता है।[4]

(1) धर्मी ठहरने का प्रभाव

अधर्मी लोगों को छुटकारा देता है (रोमियों 3:24ख)।

[3]पापों के लिए प्रायश्चित बलिदान करता है।

[4]पापियों का मेलमिलाप करता है।

छुटकारा केवल यीशु मसीह के द्वारा मिलता है। ''छुटकारा'' (यूनानीः अपोल्यूट्रोसिस) का अर्थ है गुलाम या बंदी को फिर से खरीदना, फिरौती देकर उसे स्वतंत्र कराना। फिरौती (यूनानीः लूट्रॉन) एक गुलाम को स्वतत्रं करने की कीमत निर्धारित करना है। खोए हुए लोगों को छुडाने की कीमत यीशु मसीह के जीवन से कम नहीं है जिसे उन्होंने बहुतो के ''स्थान पर'' या ''लाभ के लिए'' दिया (मरकुस 10:45; यूहन्ना 10:11; 2कुरिन्थियों 5:21)। उन्होंने स्वयं को प्रायश्चित के स्वैच्छिक बलिदान के रूप में दिया (यूहन्ना 3:18; 1पतरस1:18-19)। फिरौती चुकाई गयी, शैतान को नहीं लेकिन परमेश्वर पिता को (रोमियों 3:24-26)। अपनी मृत्यु और मुर्दो में से अपने पुनरूत्थान के कारण यीशु मसीह स्वयं ''मसीहियों की धार्मिकता और पवित्रता और छुटकारा बन गए (वापस खरीद)'' (1कुरिन्थियों 1:30; इफिसियों 2:4-7)।

परमेश्वर के अनुग्रह ने यीशु मसीह को पापियों के छुटकारें के रूप में दिया। मसीह ने फिरौती चुकाई, यानी विश्वासियों को पाप के दासत्व या बंधनों से क्रूस पर अपनी मृत्यु के द्वारा कीमत चुका कर छुटकारा दिया। मसीह केवल वह नहीं है जिसने छुटकारे को खरीद लिया बल्कि स्वयं छुटकारा हैः उन्होंने फिरौती में पैसा नहीं दिया, लेकिन अपने जीवन को जीवित बलिदान के रूप में देने के द्वारा स्वयं फिरौती बन गए! उनका शरीर पश्च्यातात बलिदान बन गया। जो मसीह ने किया वह उनके व्यक्तित्व से अलग नहीं किया जा सकता। पाप के द्वारा दास बनाए गए लोगों के छुटकारे को छुटकारा देने वाले से अलग नहीं किया जा सकता, उससे जिसने स्वयं उन्हें छुड़ाने के लिए फिरौती की कीमत चुकाई। इसलिए <u>बिना छुटकारा देने वाले के लोगों को छुड़ाना असंभव</u> है (यशायाह 43:10-11)! यीशु मसीह छुटकारा दाता है, छुटकारे का माध्यम। जब भी कोई व्यक्ति यीशु मसीह पर विश्वास करता है, उसे प्रभावशाली रूप से छुड़ाया जाता है, अर्थात, पाप के दासत्व के बधंनों से स्वतत्रं किया जाता है।[5]

(2) धर्मी ठहरने का प्रभाव

पाप के विरूद्ध परमेश्वर के पवित्र और न्यायी क्रोध को शांत करता है (रोमियों 3:25क)। परमेश्वर के अनुग्रह ने खुले तौर पर यीशु मसीह को (यूनानीः प्रोटिथेमी ''उनके लहू के द्वारा'' (क्रूस पर उनकी प्रतिस्थापन मृत्यु के द्वारा) ''प्रायश्चित बलिदान के रूप में'' (यूनानीः हिलैस्टिरियन) प्रस्तुत किया। संतुष्टिकरण अर्थातः

- पाप के विरूद्ध परमेश्वर के पवित्र और धर्मी क्रोध (आक्रोश) को शांत (सतुंष्ट, तृप्त) किया गया।
- परमेश्वर के क्रोध और दंड को दूर कर दिया गया।
- पाप दूर कर दिए गए।

<u>पश्चयाताप (पापों के) परमेश्वर की धार्मिकता और पवित्रता का मेल परमेश्वर की दया और अनुग्रह से कराता है।</u>

---

[5] पाप की सामर्थ, अशुद्धता, दोष, और उपस्थिति।

यह शब्द ''उसके लहू के द्वारा'' यह नहीं सिखाता की लहू में कोई जादुई शक्ति है। ''लहू'' ''जीवन'' का प्रतीक है (लैव्यव्यवस्था 17:11), जिसे उन्होंने स्वेच्छा से क्रूस पर अपनी मृत्यु के द्वारा बहाया। इसलिए ''लहू का बहाया जाना'' प्रश्चयाताप बलिदान का प्रतीक है जिसके द्वारा विश्वासियों के सभी पाप क्षमा किए जाते हैं (इब्रानियों 9:22) और वे पूर्ण रूप से शुद्ध किए जाते हैं (1यूहन्ना 1:17)।

एक प्रायश्चित बलिदान (यूनानीः हिलैस्टिरियन) जो परमेश्वर की पाप को दोषी ठहराने और दंडित करने की मांग को पूरा कर सके वह लाया जाना आवश्यक था। प्रायश्चित बलिदान की आवश्यकताएँ निम्नानुसार होनी चाहिएः

- <u>प्रायश्चित बलिदान कोई पाप रहित मनुष्य होना चाहिए</u>, क्योंकि जानवरों का लहू पापों के लिए प्रायश्चित नहीं कर सकता (इब्रानियों 10:3-4)।
- <u>प्रायश्चित बलिदान कोई पाप रहित मनुष्य होना चाहिए</u>, क्योंकि पापी व्यक्ति को स्वयं के लिए ही बलिदान चाढ़ाने की आवश्यकता है (2कुरिन्थियों 5:21; इब्रानियों 4:15; 7:26-27)।
- <u>प्रायश्चित बलिदान मरने के लिए इच्छुक होना चाहिए,</u> अन्यथा वह एक पिड़ित होगा (यूहन्ना 10:17-18; मत्ती 16:35)।
- <u>प्रायश्चित बलिदान परमेश्वर द्वारा चुना हुआ होना चाहिए</u>, अन्यथा यह परमेश्वर का काम नहीं होता (प्रेरितों 2:23; 1पतरस 1:20), लेकिन मनुष्य मात्र का काम होता। प्रायश्चित बलिदान वह बलिदान है जो पाप के प्रति परमेश्वर के पवित्र और धर्मी क्रोध (आक्रोश) को संतुष्ट करता है और स्वयं पाप को दूर करता है। अपनी मृत्यु और पुनरूत्थान के द्वारा यीशु मसीह स्वयं वह बन गए जिन्होंने परमेश्वर के क्रोध को दूर किया और विश्वासियों के पापों को उनसे दूर कर दिया।

इस शब्द अर्थ ''परमेश्वर पिता ने खुले तौर पर'' (यूननीः प्रोटिथेमी) मसीह को प्रायश्चित के माध्यम के रूप में प्रस्तुत किया, यह हो सकता हैः

- *आदि से ही* परमेश्वर ने योजना बनाई और मसीह को प्रायश्चित बलिदान के द्वारा छुटकारा दाता (उद्धारकर्ता) के रूप में तैयार किया (इफिसियों 1:9,11; 1पतरस 1:18-20)। ''यह व्यक्ति (यीशु) परमेश्वर के उद्देश्य और पूर्वज्ञान के अनुसार आपको सौंपा गया है'' (प्रेरितों 2:23)।
- *या इस संसार के इतिहास में* परमेश्वर पिता ने सार्वजनिक रूप से मसीह को स्वयं के लिए प्रायश्चित बलिदान के रूप में प्रदर्शित किया (प्रेरितों 2:23) ''जिसे तुम ने अधर्मियों के हाथ से क्रूस पर चढ़ाकर मार डाला'' (प्रेरितों 2:23)।

अभिप्राय वही है, जिसका अर्थ है <u>परमेश्वर पिता ही स्वयं वह हैं जिन्होंने छुटकारा प्रदान किया, आदि से उसकी योजना बनायी और इतिहास में उसे पूरा किया।</u> यह कहना सत्य की विकृति होगी कि

परमेश्वर यीशु मसीह के द्वारा जीते, क्योंकि परमेश्वर पिता ने आदि ही से उद्देश्य के साथ यह योजना बनाई कि इतिहास में मसीह उनके लिए प्रायश्चित बलिदान होंगे। परमेश्वर को मनाने के लिए और कुछ अच्छा करने (दया दिखाना) के लिए कुछ बुरा करने की आवश्यकता नहीं थी (पापों को दंडित नहीं करना)। वह पापी के प्रति दया दिखाते हैं क्योंकि वह पाप को पहले ही दंडित कर चुके हैं। परमेश्वर की धार्मिकता (न्याय) और परमेश्वर की दया दोनों एक दूसरे के साथ पूर्ण रूप से क्रूस पर मेल खाती है! क्योंकि परमेश्वर पवित्र और धर्मी हैं, वह पाप को दंडित करते है। और क्योंकि वे दयावंत और प्रेमी हैं, इसलिए उन्होंने स्वयं पापों को दंडित करने और मनुष्यों को बचाने का माध्यम प्रदान किया।

इसलिए, रोमियों 3:25 का सर्वोत्त अनुवाद इस प्रकार किया जा सकता हैः "लहू बहाने के द्वारा परमेश्वर ने यीशु मसीह को प्रायश्चित बलिदान के रूप में प्रस्तुत किया जो विश्वास के द्वारा प्रभावी होता है"। परमेश्वर ने आदि में योजना (उद्देश्य, रचना की) बनाई कि मसीह प्रायश्चित बलिदान हो (उनके पाप के प्रति धर्मी और पवित्र क्रोध को शांत करने का माध्यम) और क्रूस पर यीशु मसीह की मृत्यु के द्वारा यह प्रायश्चित मानव इतिहास में यह तब ही प्रभावी होता है जब लोग यीशु मसीह पर विश्वास करना शुरू करते हैं।

3:25–26

प्रश्न 4. **धर्मी ठहराने (उद्धार) का उद्देश्य क्या है?**

ध्यान दें।

धर्मी ठहराने का उद्देश्य परमेश्वर की पूर्ण धार्मिकता को प्रगट करना है। यह परमेश्वर का सिद्ध चरित्र दिखाना है। वचन 26 में परमेश्वर की धार्मिकता अर्थ परमेश्वर की स्वभाविक धार्मिकता है जिसे किसी भी प्रकार से दूषित नहीं किया जा सकता और यह पापियों के न्याय से प्रमाणित और अनुरक्षित है।

(1) धर्मी ठहरने का उद्देश्य परमेश्वर की सिद्ध धार्मिकता को यीशु मसीह की मृत्यु से पहले प्रगट करना है।

पुराने नियम की अवधि के समय लोगों का तर्क हो सकता है कि परमेश्वर "अन्यायी" (अधार्मिक) थे, क्योंकि उन्होंने सभी राष्ट्रों को उनके अपने तरीके से चलने दिया (प्रेरितों 17:30)। पुराने नियम के समय परमेश्वर ने अपने संयम (धीरज) को उन पापों के प्रति धीरजवंत रहने के द्वारा दिखाया जो किए गए थे। उन्होंने लोगों को तुरन्त और उनकी बुराई और अज्ञानता के अनुसार दंड नहीं दिया। और वे विश्वासियों का न्याय अब्राहम और दाऊद के समान उनके पापों का दंड न देकर करते हैं (उत्पत्ति 15:6; भजन 32:1–2)।

हालाँकि, पुराने नियम की अवधि के दौरान परमेश्वर के धैर्य को पाप के प्रति उदासीनता के रूप में नहीं समझा जा सकता। उनके दंड के निलंबन को पाप की क्षमा के रूप में वर्णित नहीं किया जा सकता! "बिना लहू बहाए पापों की क्षमा नहीं है" (इब्रानियों 9:22)!

(2) धर्मी ठहरने का उद्देश्य यीशु मसीह की मृत्यु के बाद परमेश्वर की सिद्ध धार्मिकता को प्रगट करना है।

यीशु मसीह के प्रथम अगमन में वह क्रूस पर मरे और अपना लहू बहाया। उन्होंने अपना जीवन बहुतों की फिरौती के रूप में दिया (मरकुस 10:45)। उन्होंने अपना जीवन ''अपनी भेड़ों के लिए'' दिया (यूहन्ना 10:11)। उनकी मृत्यु उनके लोगें के पापों का दंड थी।

यीशु मसीह में फिरौती और प्रायश्चित बलिदान देकरः

- परमेश्वर ने उन सभी लोगों के पापों को दंडित किया जो *पुराने नियम की अवधि में* आने वाले मसीहा पर विश्वास करते थे। इस प्रकार वे धर्मी ठहराए गए।
- परमेश्वर ने उन सभी लोगों को धर्मी ठहराया जो मसीह पर विश्वास करते हैं जो नए नियम की अवधि में पहले से आ चुके थे। इस प्रकार वे भी धर्मी ठहराए गए!

<u>इस प्रकार क्रूस पर यीशु मसीह की मृत्यु का प्रभाव न केवल भविष्य की ओर (नए नियम की अवधि) पड़ा, लेकिन भूतकाल (पुराने नियम की अवधि) की ओर भी पड़ा!</u>

क्रूस पर यीशु मसीह की मृत्यु के बाद कोई भी यह नहीं कह सकता कि परमेश्वर ''अन्यायी (अधर्मी)''! क्रूस पर यीशु मसीह की मृत्यु के बाद, शैतान अब विश्वासियों पर यह अरोप नहीं लगा सकता कि उनके पापों का प्रायश्चित नहीं किया गया (प्रकाशितवाक्य 12:10-11)! क्रूस पर यीशु मसीह की मृत्यु पुराने नियम और नए नियम दोनों में विश्वासियों के लिए धर्मी ठहरने का आधार या कारण है!

यीशु मसीह की मृत्यु यह साबित करती है कि परमेश्वर पूर्ण रूप से ''न्यायी (धर्मी) थे जब उन्होंने उन पापों को दंडित किए बिना छोड़ दिया जो विश्वासियों द्वारा यीशु मसीह के प्रथम आगमन से *पहले* किए गए थे। इससे यह भी साबित होता कि परमेश्वर अभी भी पूर्ण रूप से ''धर्मी (न्यायी)'' है जब वे उन पापों को दंडित किए बिना छोड़ देते हैं जो *वर्तमान समय में* विश्वासियों द्वारा किए जाते हैं! फिरौती की कीमत या प्रायश्चित बलिदान की खुबियाँ *पिछले* सभी युगों तक, मनुष्य की उत्पत्ति से लेकर यीशु मसीह के दूसरे आगमन के युग तक पहुँचती हैं! यीशु मसीह का पुनरूत्थान यह सिद्ध करता है कि परमेश्वर ने यीशु मसीह के प्रायश्चित बलिदान को स्वीकार किया! यीशु मसीह की मृत्यु और पुनरूत्थान इस संसार के इतिहास में मनुष्य के साथ परमेश्वर के व्यवहार का केन्द्र है! इसी कारण नए नियम में सुसमाचार का केंद्र ''यीशु मसीह की मृत्यु और पुनरूत्थान है'' (यूहन्ना 1:29; 10:17-18; 11:51-52; 12:31-32; प्रेरितों. 2:23-24,36; 3:13-15,18; 4:10-12; 5:30-31; 7:52,55; 8:32; 10:39-43; 13:27-35; 26:22-23; 1कुरिन्थियों 1:23-24; प्रकाशितवाक्य 12:11)।

जब परमेश्वर विश्वासियों को धर्मी ठहराते हैं, तो वे अपने (सुंदर) चरित्र या अच्छे (धार्मिक) कामों के द्वारा धर्मी नहीं ठहरते। वे परमेश्वर ने यीशु मसीह में और यीशु मसीह के द्वारा इतिहास में एक बार

में हमेशा के लिए जो किया उसके कारण धर्मी ठहरते है! वे परमेश्वर एक कार्य द्वारा भी धर्मी नहीं ठहरत जिसमे वह व्यवस्था कि माँगों को एक ओर रखते हैं जैसा की पृथ्वी पर कुछ सामर्थी शासक कर कसते हैं। वे उनके स्थान पर यीशु मसीह के द्वारा पूरा किए गए उद्धार के कार्य के कारण धर्मी ठहरते है, जिसमे विश्वासियों के उद्धार (न्याय और शुद्धिकरण) और पापों के दोष (दंड) की परमेश्वर की सारी धार्मिक आवश्यकता (व्यवस्था) पूर्ण रूप से पूरी की गई है! केवल यीशु मसीह का क्रूस ही प्रत्यक्ष प्रगटिकरण है जहाँ पापी के लिए परमेश्वर की दया और अनुग्रह (प्रेम) परमेश्वर की धार्मिकता (न्याय) और पवित्रता के साथ पूरी तरह मेल खाती है।

3:27-31

प्रश्न 5. **धर्मी ठहरने (उद्धार) के क्या परिणाम हैं?**

ध्यान दें।

(1) धर्मी ठहरने (उद्धार) का परिणाम

विश्वासियों को नम्र बनाए रखता है (रोमियों 3:27-28)।

"विश्वास कि व्यवस्था" सभी मानव घमण्ड को दूर करती है। यहाँ "व्यवस्था" शब्द का अर्थ है "सिद्धांत, प्रणाली, तरीका या चीजों का क्रम"। नैतिक लोगों का उनके अच्छे कामों के प्रति सभी घमण्ड और धार्मिक लोगों का उनके धार्मिक कामों के प्रति सभी घमण्ड (नैतिक, औपचारिक और नागरिक व्यवस्था को बनाए रखने की कोशिश)[6] दूर कर दिया गया। व्यवस्था (सिंद्धात) पर आधारित घमण्ड, व्यवस्था के कामों को बनाए रखने के द्वारा धर्मी होने का दिखावा करना (नैतिक, औपचारिक और नागरिक व्यवस्था को बनाए रखने की कोशिश) है, लेकिन यीशु मसीह द्वारा पूर्ण किए गए उद्धार के कार्य में विश्वास के द्वारा सच्ची धार्मिकता की व्यवस्था (सिद्धांत) नें घमण्ड को दूर कर दिया।

दो चीजें विपरीत है, प्रत्येक दूसरी को दूर करती है। वह प्रणाली (यहूदियों की) जिसमें व्यवस्था (नैतिक, औपचारिक और नागरिक व्यवस्था और मानव निर्मित व्यवस्था भी जोड़ दी गई) धर्मी ठहरने का तरीका है वह उस प्रणाली (बाइबल की) को दूर करता है जिसमें विश्वास धर्मी ठहरने का तरीका है। कामों के द्वारा धर्मी ठहरना इस पर आधारित है कि एक व्यक्ति क्या है और क्या करता है जबकि विश्वास के द्वारा धर्मी ठहरना इस पर आधारित है कि परमेश्वर कौन हैं और क्या करते है! व्यवस्था के काम (अर्थातः नैतिक, औपचारिक, नागरिक और मनुष्यों द्वारा जोड़ी गई व्यवस्था को बनाए रखने की कोशिश) स्वयं का अभिनदंन करते है जबकि यीशु मसीह में विश्वास स्वयं का त्याग करता है। व्यवस्था के काम (अर्थातः नैतिक, औपचारिक, नागरिक और मनुष्यों द्वारा जोड़ी गई व्यवस्था को बनाए रखने की कोशिश) स्वयं की उपलब्धियों पर घमडं करते हैं जबकि विश्वास यीशु मसीह द्वारा पूर्ण किए गए उद्धार के कार्य की महिमा करता है। इसलिए विश्वास की व्यवस्था (सिद्धांत) कामों की व्यवस्था

---

[6]उदाहरण के लिए, (1) अंगीकार करना कि केवल एक ही परमेश्वर है, (2) दिन में कई बार प्रार्थना करना, (3) कई बार उपवास करना, (4) बहुत सा पैसा देना, (5) बहुत सी तीर्थ यात्राएँ करना, (6) खतना करवाना, (7) धार्मिक कपड़े पहनना (किपा, सिर पर बाँधने का रूमाल, बुर्खा), (8) "स्वच्छ धार्मिक" भोजन खान (कोषेर, हलाल सुअर नहीं)।

(सिद्धांत) को धर्मी ठहरने के माध्यम के रूप में पूर्ण रूप से दूर करती है! इसलिए वचन 28 का निष्कर्ष इस प्रकार हैः ''हम पाते है कि एक व्यक्ति व्यवस्था (अर्थातः नैतिक, औपचारिक, नागरिक और मनुष्यों द्वारा जोड़ी गई व्यवस्था को बनाए रखने की कोशिश)[7] से अलग, विश्वास के द्वारा धर्मी ठहरता है''। एक व्यक्ति केवल यीशु मसीह के द्वारा पूर्ण किए गए उद्धार के कार्य में विश्वास करने के द्वारा ही धर्मी ठहरता है!

''विश्वास के द्वारा धर्मी ठहरना'' अर्थातः परमेश्वर अनुग्रहपूर्ण तरीके से यीशु मसीह की धार्मिकता को अयोग्य विश्वासी के के खाते में डालते (देना, गिनना, जोड़ना) हैं। इसका अर्थ हैः परमेश्वर एक विश्वासी को यीशु मसीह में पूर्ण रूप से धर्मी *घोषित* करते हैं और अपनी दृष्टि में उससे *ऐसे व्यवहार* करते है जैसे कि वह पूर्ण रूप से धर्मी है।

(2) धर्मी ठहरने का परिणाम यह सिद्ध करता है
कि केवल परमेश्वर के पास ही लोगों के उद्धार का
एक मात्र तरीका है (लोगों को धर्मी ठहरने का मार्ग) (रोमियों 3:29:30)।

व्यवस्थाविवरण 6:4 यह साबित करता है कि यहूदी यह विश्वास करते थे कि एक ही परमेश्वर है। यदि एक ही परमेश्वर है तो उसे यहूदियों और गैर–यहूदियों (अन्यजातियों) दोनों को परमेश्वर होना चाहिए! और यदि वह सब लोगों का परमेश्वर है तो, केवल एक ही तरीका हो सकता है जिसके द्वारा वह लोगों को धर्मी ठहराता है। वह तरीका व्यवस्था के वह काम नहीं है, जिन्हें लोग करते हैं, बल्कि उस पर विश्वास करना है जो परमेश्वर पहले ही कर चुके हैं!

वह यहूदियों को ''विश्वास के द्वारा'' धर्मी ठहराएगें (यूनानीः एक पिस्टिऑस) (रोमियों 1:17; 14:16) और अन्यजातियों को ''विश्वास से'' (यूनानीः डिआ पिस्टिऑस) (रोमियों 3:22, 25)। इन दोनों शब्दों में कोई अंतर नहीं है, क्योंकि पौलुस इस दोनों का प्रयोग एक ही बात को कहने के लिए करता है। सभी लोग, अपने वास्तविक धर्म या धर्मनिरपेक्षता के बिना, केवल उस विश्वास के माध्यम से धर्मी ठहराए जाएंगे जो बाइबल के परमेश्वर ने कहा और यीशु मसीह के द्वारा किया! भविष्यकाल अंतिम न्याय को संदर्भित नहीं करता, बल्कि विश्वास के द्वारा धर्मी ठहरने को व्यक्त करता है जो अभी से धर्मी ठहरने का निश्चित माध्यम है।

(3) धर्मी ठहरने का परिणाम व्यवस्था की पुष्टि करना है (रोमियों 3:31)।

कुछ लोगा रोमियों 3:31 को अध्याय 4 के परिचय के रूप में देखते हैं तब ''व्यवस्था'' शब्द पूरे पुराने नियम को संदर्भित करता है। हालाँकि रोमियों 3:31 स्वभाविक रूप से अध्याय 3 से संबंधित है और ''व्यवस्था'' शब्द परमेश्वर की आज्ञा मानने की व्यवस्था को संदर्भित करता है जो सभी लोगों से आज्ञापालन की मांग करता है (जैसा की पौलुस का पत्र रोमियों 7:7–13 और 13:8–10 में सिखाता है) (नैतिक व्यवस्था)।

[7]यहूदियों में थोरा, कुछ विशेष मसीहियों में कर्मकांडवाद, और मुस्लमानों में शरिया।

रोमियों 3:20 में पौलुस ने कहा, "कोई भी व्यक्ति व्यवस्था के कामों से धर्मी नहीं ठहरता (नैतिक, औपचारिक, और नागरिक व्यवस्था को बनाए रखने की कोशिश के द्वारा)"। रोमियों 3:21 में उसने कहा, "परमेश्वर की धार्मिकता व्यवस्था से अलग प्रगट हुई (अर्थातः नैतिक, औपचारिक, और नागरिक व्यवस्था को बनाए रखना)"। रोमियों 3:27 में वह कहता है, "सुसमाचार की व्यवस्था (अर्थातः सिद्धांत या तरीका) विश्वास है, व्यवस्था के काम नहीं (अर्थातः नैतिक, औपचारिक, और नागरिक व्यवस्था को बनाए रखना)।" और रोमियों 3:28 में उसने कहा, "मनुष्य व्यवस्था के कामों से अलग ही (अर्थातः नैतिक, औपचारिक, और नागरिक व्यवस्था को बनाए रखना) विश्वास के द्वारा धर्मी ठहरता है।"

अनूठा सवाल तो यह है कि अभी भी "व्यवस्था का क्या अर्थ है (जो नैतिक व्यवस्था है क्योंकि औपचारिक और नागरिक व्यवस्था को पूरा कर दिया गया और रद्द कर दिया गया)? क्या व्यवस्था (अर्थातः नैतिक व्यवस्था) ने परमेश्वर की आज्ञाओं को जो सभी लागों से आज्ञापालन की माँग करती है, बेकार कर दिया?"

पौलुस का स्पष्ट उत्तर है "नही!" पौलुस ने इस प्रश्न का अनुमान लगाया और बिना विस्तार के इसका उत्तर दिया। <u>विश्वासी "व्यवस्था" (अर्थातः नैतिक व्यवस्था) को यीशु मसीह में अपने विश्वास के द्वारा रद्द नहीं करते। बल्कि वे व्यवस्था (अर्थातः नैतिक व्यवस्था) को बनाए रखते हैं।</u> व्यवस्था (अर्थातः नैतिक व्यवस्था) के विषय में पौलुस का तर्क बाद में रोमियों 7:7–13 और 13:8–10 में जारी रहाता है। विश्वासी "व्यवस्था" को परमेश्वर की धार्मिक और पवित्र आवश्यकता के संदर्भ में और परमेश्वर के द्वारा धर्मी ठहराए गए (उद्धार पाए) लोगों द्वारा प्रदर्शित दस आज्ञाओं के संदर्भ में प्रदर्शित करते हैं।

<u>चरण 4. लागू करना।</u> **<u>अनुप्रयोग</u>**

विचार करें। इन वचनों में कौन–से सत्य मसीहियों के लिए संभावित अनुप्रयोग हैं?

साझा करें और अभिलेखित करें। आइए हम एक–दूसरे के साथ विचार–मंथन करें और रोमियों 2:1–16 से संभावित अनुप्रयोगों की सूची अभिलेखित करें।

विचार करें। परमेश्वर किस संभावित अनुप्रयोग को चाहता है कि आप उसे एक व्यक्तिगत अनुप्रयोग में बदल दें?

अभिलेखित करें। इस व्यक्तिगत अनुप्रयोग को अपनी स्मरण–पुस्तक में लिख लें। अपने व्यक्तिगत अनुप्रयोग को साझा करने में स्वतंत्रता महसूस करें। (स्मरण रखें कि प्रत्येक समूह के लोग अलग–अलग सत्य लागू करेंगे या एक ही सत्य के अलग–अलग अनुप्रयोग करेंगे। निम्नलिखित संभावित अनुप्रयोगों की एक सूची है।)

(याद रखें: प्रत्येक छोटे समूह में, समूह के सदस्य अलग–अलग चीजें साझा करेंगे)

1 <u>रोमियों 3:1–31 से संभावित अनुप्रयोगों के उदाहरण।</u>

3:21 खोजें कि कैसे पुराने नियम का संदेश भी "विश्वास के द्वारा परमेश्वर के अनुग्रह से धर्मी ठहराना है"।

3:22 खोजें की क्यों नया नियम यह सिखाता है कि यहूदियों और अन्यजातियों में कोई अंतर नहीं।

3:23 उन सभी क्षेत्रों के बारे में सोचें जहाँ स्वभाविक मनुष्य परमेश्वर के पूर्ण आदर्श मानकों से रहित है।

3:27 विचार करें कि आप मसीह और उनके उद्धार के पूर्ण कार्य पर किस प्रकार घमण्ड कर सकते हैं।

3:28 जाँचे कि क्या आप अभी भी <u>परमेश्वर की स्वीकृति पाने के लिए कुछ विशेष व्यवस्थाओं</u> को बनाए रखते हैं।[8]

3:29 यदि बाइबल का परमेश्वर ही सब का परमेश्वर है तो आप उन्हें अपने आस पास के लोगों के सामने किस प्रकार पेश कर सकते हैं।

3:31 विश्वास और नैतिक व्यवस्था (दस आज्ञाएं) के कार्य के बीच बहुत स्पष्ट रूप से भेद करें।

2. <u>रोमियों 3:1–31 के व्यक्तिगत अनुप्रयोगों के उदाहरण।</u>

रोमियों 3:24 कहता है कि हम परमेश्वर के अनुग्रह से सेंत मेंत धर्मी ठहराए गए हैं। मैं याद रखना चाहता हूँ कि एक तरफ तो मैं बिना किसी कीमत के जो चुका सकता था, सेंत मेंत में धर्मी ठहराया गया हूँ लेकिन दूसरी ओर मैं बहुत अधिक कीमत चुकाने के द्वारा धर्मी ठहरा हूँ जिस परमेश्वर ने चुकाया। उन्होंने मेरे स्थान पर फिरौती की कीमत और प्रायश्चित बलिदान के रूप में अपने एक मात्र पुत्र को दिया है। परमेश्वर का अनुग्रह सस्ता नहीं है, लेकिन बहुत मंहगा है!

रोमियों 3:27 कहता है कि मसीह में विश्वास की विधि मनुष्य के द्वारा कामों की विधि को दूर कर देती है इसलिए कोई भी किसी भी प्रकार से अपनी उपलब्धियें पर घमण्ड नहीं कर सकता। 1कुरिन्थियों 1:30–31 कहता है कि मैं घमण्ड कर सकता हूँ, लेकिन केवल मसीह में, जो मेरी धार्मिकता, पवित्रता और उद्धार (छुटकारा) बना! मैं केवल यीशु मसीह और उनके द्वारा मेरे लिए पूरा किए गए उद्धार के कार्य पर घमण्ड करना चाहता हूँ।

<u>चरण 4. प्रार्थना।</u> **प्रतिउत्तर**

आइए उस एक सत्य के लिए प्रार्थना करने हेतु बारियाँ लें, जो परमेश्वर ने हमें रोमियों 3:21–31 में सिखाया है। (इस बाइबल अध्ययन के दौरान आपने जो कुछ भी सीखा है, उसका प्रार्थना में प्रतिउत्तर दें। केवल एक या दो वाक्य में प्रार्थना करने का अभ्यास करें।
स्मरण रखें कि प्रत्येक समूह के लोग अलग–अलग बातों के विषय में प्रार्थना करेंगे।)

---

[8] उदाहरण के लिए क्या आपको निश्चित कपड़े (एक सूट, एक टोपी, एक बुर्खा, एक सिर पर बांधने वाला रूमान) पहनने चाहिए? क्या आपको कुछ निश्चित भोजन (सुअर) नहीं खाना चाहिए? क्या आपको कुछ निश्चित पेय (कॉफी) नहीं पीने चाहिए? क्या आपको विशेष समय (विश्राम) रखना चाहिए? क्या आपको कुछ औपचारिक अनुष्ठानों में कपड़ो की धुलाई या किसी निश्चित रूप से बपत्तिस्मा (डूबना) लेना चाहिए? क्या आपको कुछ विशेष त्यौंहार (फसह) मनाने चाहिए? क्या आपको पैसे का कुछ निश्चित भाग (दशमांश) देना चाहिए? क्या आपको नाचने और अपने पुर्वजों का सम्मान करने से दूर रहना चाहिए या फिर अपने जीवन में निश्चित मार्ग संस्कारों से बनचा चाहिए; आदि।

5	**प्रार्थना** (8 मिनट) *(प्रतिक्रियाएँ)* **दूसरों के लिए प्रार्थना**

दो या तीन के समूहों में ***प्रार्थना करना जारी रखें।*** एक दूसरे के साथ एक दूसरे के लिए और दुनिया में लोगों के लिए प्रार्थना करें (रोमियों 15:30; कुलुस्सियों 4:12)।

6	**तैयारी** (2 मिनट) *(निर्धारित कार्य)* **अगले अध्याय के लिए**

(***समूह अगुवा।*** समूह के सदस्यों को लिखित रूप में घर पर इसकी तैयारी करने को दें या उन्हें इसकी प्रतिलिपि लेने दें)।

1. प्रतिबद्धता। चेले बनाने, कलीसिया बनाने और राज्य का प्रचार करने के लिए समर्पित हों।
2. किसी अन्य व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ मिलकर रोमियों 3:21-31 का प्रचार करें, पढ़ाएँ या अध्ययन करें।
3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। प्रतिदिन **1राजाओं 3,11,17 और 18** के आधे अध्याय से परमेश्वर के साथ एक शांत समय बिताएँ। पसंदीदा सत्य विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
4. याद करना। **(4) रोमियों 2:15।** पिछले 5 स्मरण किए गए बाइबल पदों की दैनिक समीक्षा करें।
5. शिक्षा। मत्ती 22:1-14 में वर्णित "विवाह-भोज का दृष्टांत" और लूका 14:15-24 में वर्णित "बड़े भोज का दृष्टांत" को तैयार करें।

   दृष्टांतों की व्याख्या के लिए छः दिशानिर्देशों का उपयोग करें।
6. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी व्यक्ति या किसी विशेष परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन संहिता 5:3)।
7. प्रचार करने के लिए परमेश्वर का राज्य विषय पर अपने लेख का अद्यपन करें। शांत समय के अपने नोट्स, अपने स्मरण किए नोट्स, अपने शिक्षण नोट्स और इस तैयारी को शामिल करें।